Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

भिलंगना नदी घाटी में पर्यटन के स्थल

आरती[1], रामेन्द्र कुमार[2] एवं सौरभ डण्डरियाल[2]
[1]शोध छात्र हे.न.ब. गढवाल वि.वि.
[2]छात्र एम. बी. ए. टूरिज्म हे.न.ब.गढवाल वि.वि. श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड.

सारांश :

आरम्भिक काल से ही मनुष्य भोजन और निवास की खोज में अपनी आवश्यकताओं तथा आवेगों की संतुष्टि हेतु विचरण करता रहा है। प्राचीन समय में यात्राओं का मुख्य ध्येय व्यापार ही हुआ करता था। समय परिवर्तन के साथ साथ यात्राओं के उद्देश्य साम्राज्य विस्तार, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोरंजनात्मक, शैक्षिकआदि में बदलते रहें।वर्तमान समय में मानव बेहतर व सुख सुविधापूर्ण जीवन जीने की चाह में अधिकतम व्यस्त होता जा रहा है। व्यस्तता व चिन्ता मानव जीवन का अंग बनती जा रही है, जिस कारण मानव स्वास्थ्य में गिरावट देखने को मिल रही है। मानव की स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता ही मानव को प्रकृति के करीब ले जाती है, मानव की यही घुमन्तु प्रवृति ही पर्यटन को प्रोत्साहित व विकसित करती है। भारत में हिमालय भी प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर एक ऐसा ही मनोहारी क्षेत्र है जहाँ अनेकों पर्यटक देश–विदेश से प्रकृति के अद्भुद रुप का आनन्द लेने आते ही रहते हैं।

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखण्ड में भी तीर्थाटन के लिए तीर्थयात्री मई से लेकर अक्टूबर तक अधिक संख्या में आते हैं, तथा इसी तीर्थाटन ने पर्यटन की नई संकल्पना को विकसित किया है। मानव ज्ञान के साथ उत्तराखण्ड में भी पर्यटन प्राकृतिक सौन्दर्य आधारित व अन्य कारणों से भी होने लगा है।उत्तराखण्ड में भिलंगना नदी घाटी क्षेत्र भी प्रकृति के अनुपम व लौकिक दृश्यों से अटी पड़ी है। यहाँ पर प्रकृति ने अपनी सुन्दरता विभिन्न रुपों में निखारी है, जिसमें बुग्याल, हिम शिखर, फूलों की घाटी, प्राकृतिक झरने, झीलें वहाँ पर मौजूद हैं। परन्तु भिलंगना घाटी में पर्यटन के विकास पर कम ध्यान दिया गया है। स्थानीय स्तर एवं सरकारी सहायता द्वारा इस घाटी में पर्यटन को रोजगार संसाधन व आर्थिकी के विकास के लिए प्रयोग किया जा सकता है। अनेकों कारणों से पर्यटक भिलंगना घाटी के पूर्ण सौन्दर्य का लुफ्त नही उठा पा रहे हैं, जिनमें मानवीय कारक के रुप में सरकार से लेकर स्थानीय जनता इसके कारण हो सकते हैं। साथ ही साथ प्राकृतिक कारकों में वर्षा, भूस्खलन, बादल का फटना, त्वरित बाढ़ आदि पर्यटन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं

प्रस्तावना

पर्यटन व गमनागमन का उतना ही पुराना इतिहास रहा है जितनी पुरानी मानव जाति स्वयं है (निकरसन एवं कैर 1998)। प्राचीन समय में लोग खाना खोजने, खोज व व्यापार करने के लिए यात्रा किया करते थे। कुछ समय बाद छुट्टियों का समय बिताने के लिए पूरे ग्रह पर यात्राऐं होने लगीं। तकनीकी विकास ने यात्राओं को अधिक आसान, सुविधापूर्ण व पहले से काफी तीव्र (कम समय लेने वाला) बना दिया है। भारत में यात्राओं व पर्यटन का बडा ही पुराना इतिहास रहा है। शदियों से तीर्थाटन के लिए, फिर रेशम व मसालों के व्यापार के लिए, आगे चलकर ब्रिटिश साम्राज्य में हिल स्टेशनों के विकास के बाद यात्राऐं बढती ही चली गई।

पर्यटन वर्तमान समय में एक नई ऊर्जा के रुप में आर्थिक जगत में उभर कर आया है। पर्यटन को दुनिया में शीघ्रता से बढता हुआ उद्योग समझा जा रहा है (wto 200a)। उत्तराखण्ड पर्यटन की अपार सम्भावनाओं के रुप में पहचान बना चुका है जिसमें साहसिक पर्यटन विकास के चरम पर है। मन्त्रमुग्ध कर देने वाली भौगोलिक स्थलाकृतियां, आश्चर्यजनक रुप से विभितता पूर्ण वनस्पति व जीवों से सजे हुऐ विभिन्न पारिस्थितिक तन्त्र उत्तराखण्ड के पर्यटकों के मन पर अमिट छाप छोडते हैं (रावत व शर्मा)।

पर्यटन वृहत अर्थ में WTO world tourism organization us ifjHkkf'kr fd;k gSA %&The activities of a person's traveling and staying in places outside their usual environment for not more than one consecutive year for leisure business and other purpose not related to exercise of an activity remunerated from within the place visited (wto 2000b)

पर्यटन को अंग्रेजी भाषा में Tourism कहते हैं जिसका अर्थ ग्रीक भाषा के शब्द Tornos से लिया गया है जिसका अर्थ एक यन्त्र से है जो कि वृताकार होता था। Travel (ट्रैवेल) एक फ्रैच भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ''कष्ट'' इस से प्रतीत होता है प्राचीन काल में यात्रा करने की दशाऐं दण्डयुक्त थी। मानव सभ्यता के आरम्भिक काल में यात्रा करना एक दुष्कर कार्य हुआ करता था। Tour टूर शब्द हिब्रू भाषा का भी शब्द है जिसे इस भाषा के Torah शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ अध्ययन खोज से है। 18 वीं शताब्दी के आरम्भ में एक अंग्रेज लेखक डॉ0 डिको की एक पुस्तक '' A tour through the whole island of Britain'' (ब्रिटेन के सम्पुर्ण द्वीप समूह का पर्यटन) से स्पष्ट होता है कि 18 वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे tour शब्द अपने आधुनिक अर्थ में प्रसारित हो चुका था। 18 वीं शताब्दी के अन्त में स्कॉटलैण्ड के सुविख्यात लेखक प्रो0 एडम स्थिम ने tour शब्द में Ist अक्षर

VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

जोडकर tourist शब्द का निर्माण किया। 19 वीं शताब्दी में ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी भाषा शब्दकोष जवनतपेउ पर्यटन शब्द की व्यवहारिक एवं लोकप्रिय धारणा दस प्रकार बनी ''आनन्द के लिए की गयी यात्रा का सिद्धान्त एवं व्यवहार ही पर्यटन है।''

इस प्रकार 1940 में प्रो0 हुन्जीकर और क्राफ्ट ने पर्यटन की प्रथम सर्वमान्य परिभाषा

इस प्रकार प्रस्तुत की :—

''सम्बन्धित क्षेत्र में अनिवासियों की यात्रा एवं ठहसाव से उत्पन्न हुई घटनाओं एवं सम्बन्धों का योग ही पर्यटन है, शर्त यह है कि उन अनिवासियों की यात्रा एवं ठहराव स्थायी न हो तथा वे धनार्जन के कार्य से न जुडे हों ''

''The sum of the phenomena and relationship arising from the travel and stay of non-residents, in so far as they do not lead to permanent residence and are not connected with earning activity

The Tourism Society Of England '' ने पर्यटन को परिभाषित कर कहा के अपने सामान्य निवास व कार्य स्थल से कुछ समय के लिए अन्य स्थलों पर जाना व क्रियाकलाप करना चाहें वह किसी भी उद्देश्य के लिए हो पर्यटन है।

'' Tourism is the temporary, short term movement of people to destination outside the places where they normally live and work and their activities during the stay at each destination it includes movement for all purpose^

पर्यटन के प्रकार :— पर्यटन को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

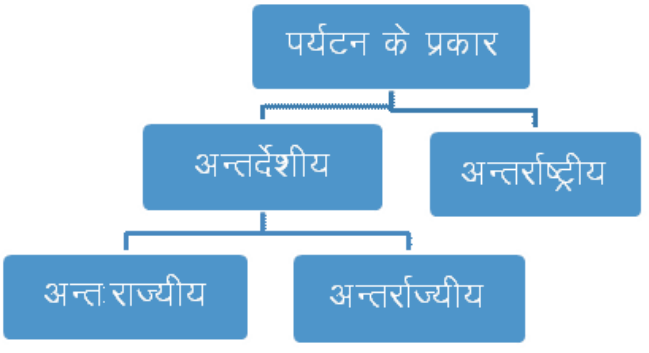

उत्तराखण्ड में पर्यटन व पर्यटकों का स्वरुप अन्तर्राष्ट्रीय व अन्तर्देशीय दोनों ही है। यहां देश व विदेश दोनों स्थानों से पर्यटकों का आगमन होता है। पर्यटन उत्तराखण्ड की आर्थिकी का एक महत्वपूर्ण साधन रहा है जिसके विकास के लिए सरकार प्रयत्नशील रहती है। उत्तराखण्ड में पर्यटन उत्तराखण्ड मे पर्यटन तीर्थाटन, साहसिक खेल, ऐतिहासिक जिज्ञासा सम्बन्धित, संस्कृति सौन्दर्य दर्शन, स्वास्थ्य कारक आदि से प्रभावित होकर आते है। हिमालय अपने आप में प्रकृति की महान नैसर्गिक सुन्दरता को बसाये है। यह क्षेत्र पर्वतीय पर्यावरण पर अध्ययन करने हेतु सर्वोतम है। स्थानीय सरकारों पर क्षेत्रीय विकास का दबाव अत्यधिक है जिस कारण वह क्रियाशील सहभागिता व औधोगिकता के लिए निजी व सार्वजनिक क्षेत्र को प्रोतसाहित व महान किरदार हेतु प्रेरित कर रही है ताकि विकास की नितियों का निर्माण प्रयोग हो सके। इसी प्रकार सतत विकासीय पर्यटन योजना की सफलता पर्यटक, पर्यटन उद्योग, मेजबान जनसंख्या व सरकार आदि पर निर्भर करती है व करेगी।

अध्ययन क्षेत्र :— हिमालय की महत्वपूर्ण नदी भागीरथी की सहायक भिलंगना नदी टिहरी जनपद का प्रमुख नदी तन्त्र है। यह खतलिंग ग्लेश्यिर से उद्गमित होकर गणेश प्रयाग में भागीरथी मे समाहित होती थी, परन्तु अब टिहरी बांध के बनने के कारण यह कुछ पीछे ही झील में समाहित हो जाती है। भिलंगना घाटी, मन्दाकिनी,व अलकनन्दा के पश्चिम, तथा भागीरथी घाटी के पूर्व में स्थित है। यह $30^{\circ}20'3''$ से $30^{\circ}53'2''$ उ0 अक्षांश व $78^{\circ}29'4''$ से $79^{\circ}3'3''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। टिहरी जिले का यह सबसे बड़ा विकास खण्ड है।

VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

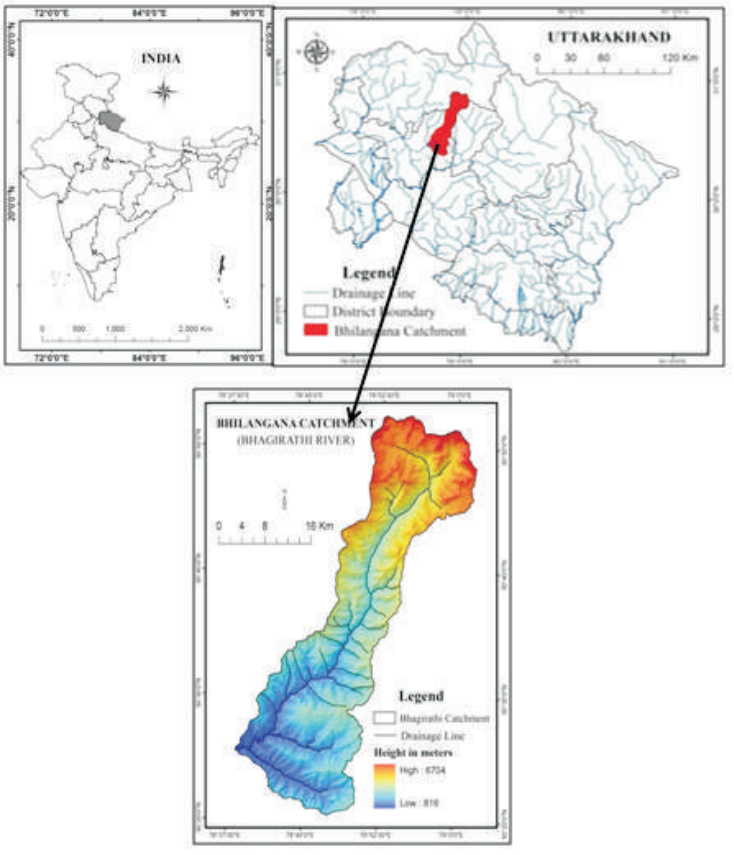

उद्देश्य :– 1 प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य पर्यटन एवं मनोरंजन के साधनों की पहचान करना ताकी पर्यटन स्थलों के नियोजित विकास हेतु योजना बनाई जा सके
2 इन स्थलों को विकासित कर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के योगदान को निर्धारित करना व आय बढोतरी की सम्भावनाऐं खोजना।
3 पर्यटन स्थलों एवं यात्रा मार्गों को मानचित्र में दर्शाना ताकी यह आसानी से पर्यटकों द्वारा भ्रमण हेतु चयनित किये जा सके।
4 भिलंगना नदी घाटी में पर्यटन उद्योग की मुख्य समस्याओं का अवलोकन व उद्योग की प्रगति हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि तन्त्र :–प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकनात्मक व विश्लेषणात्मक विधि का तन्त्रों का प्रयोग करते हुए सर्वप्रथम क्षेत्रीय भ्रमण कर अवलोकन के आधार पर पर्यटन एवं मंनोरंजन के साधनों तथा स्थलों की पहचान की गई, तत्पश्चात उनका विश्लेषण कर उनको मानचित्र के माध्यम से दर्शाने व विकसित करने हेतु रुपरेखा तैयार की गई।

भिलंगना नदी घाटी में पर्यटन स्थल

भिलंगना नदी में पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु अनेकों स्थान ऐसे हैं जिनका कुछ हद तक विकास करके उन्हें पर्यटन हेतु विकसित किया जा सकता है।

भिलंगना नदी घाटी में पर्यटन के स्थल का निम्न आधारों में बांटा जा सकता है। :–

VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

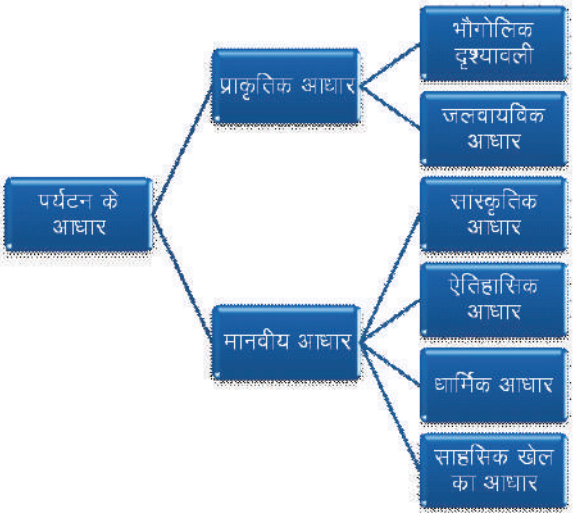

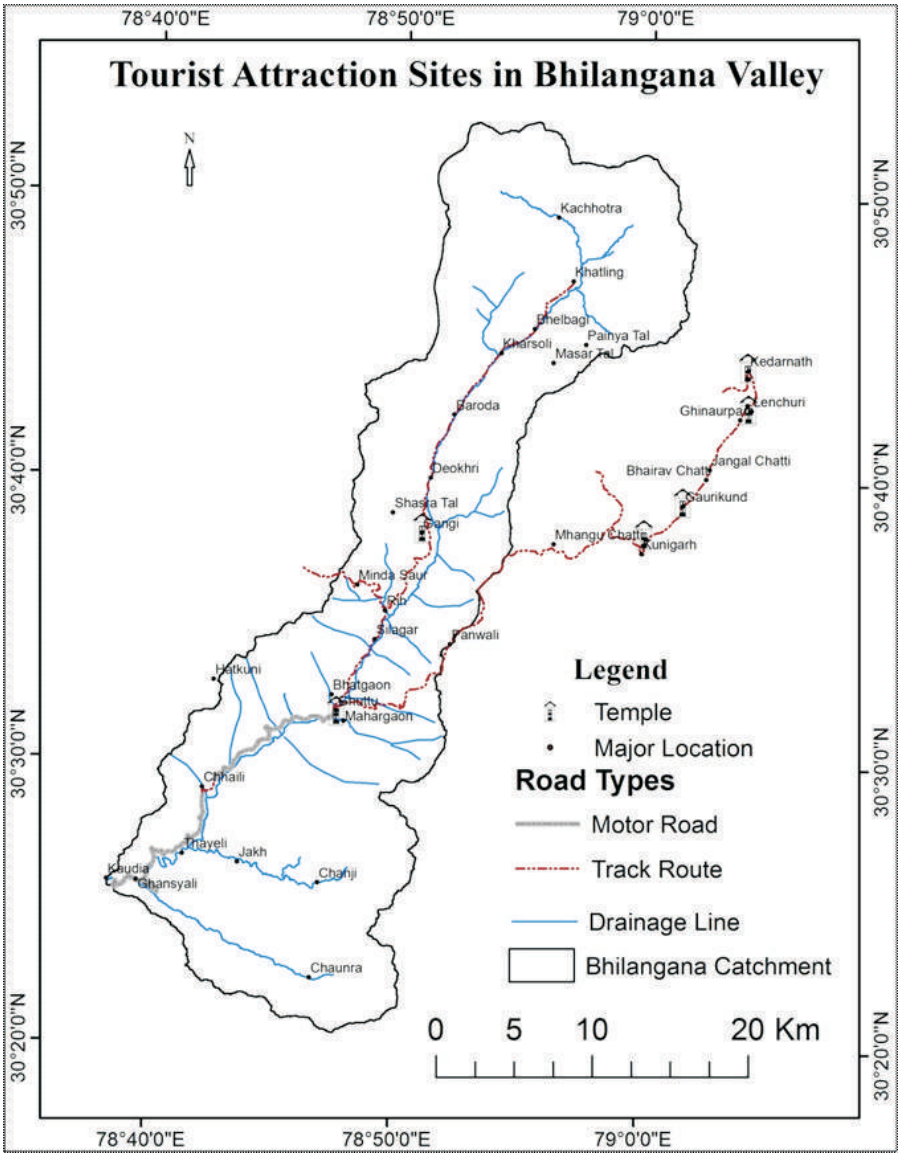

VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

प्राकृतिक आधार पर पर्यटन :– प्राकृतिक भू दृश्यावलियाँ मानव के मनमस्तिक को अति प्रभावित करते हैं तथा स्वयं के द्वारा दर्शनीय स्थानों को वह कभी भुला नही सकता है। पर्यटक प्रकृति के अपार सौन्दर्य से भाव विभोर होता है व यह मनभावक दुश्य उसके मनमस्तिक पर गहरी छाप छोडतें हैं।

भौगोलिक दृश्यावलियों जैंसे नदियां, झरने, झीलें, घाटियाँ, गार्ज, बुग्याल (पाश्चर लैण्ड), हिमांनियाँ, वन आदि आते है। इस प्रकार के स्थान भिलंगना नदी घाटी क्षेत्र में महासर ताल, पंवाली कांठा, पटाग्नियां, खतलिंग ग्लेशियर, सहस्त्रताल आदि है।

सहस्त्रताल झील

थैल्या सागर पीक

पंवाली कांठा

जलवायविक दशाओं के अन्तर्गत मौसम की गतिविधियों में वर्षा, तापमान, आर्द्रता, आदि को सम्मिलित किया जाता है तथा जो पर्यटन को प्रभावित करते है। यह पर्यटकों के स्वास्थ्य, कार्य करने की क्षमता व क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। इस आधार पर क्षेत्र में सर्दियों में स्नोफॉल का दृश्य, बुग्याल के विहगम दृश्य, गर्मियों में घाटी के मनोरम स्वास्थ्य वर्धक जलवायु, आदि महत्वपूर्ण है।

VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

विभिन्न मौसमों में घाटी के विहगंम दृश्य

मानवीय या सामाजिक आधार में :–

धार्मिक आधार :– घाटी में कई ऐंसें स्थान हैं जो अपना धार्मिक महत्व रखते हैं। यह स्थल मानव की आस्था का प्रतीक हैं व उनके विश्वास की नींव है। इस प्रकार के स्थान घाटी में रानीगढ़ी माता मन्दिर, आदि अनेकों धार्मिक स्थल है।

रानीगढ़ी माता मन्दिर

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक आधार :–सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व के परिणाम स्वरुप घाटी में भव्य मेलों का आयोजन होता है। टिहरी रियासत में अनेकों राजाओं का आधिपत्य रहा जिन्होने अनेकों मन्दिरों की स्थापना अपनी आध्यात्मिकता के आधार पर आज भी इन देवताओं की यात्रा डोली एक स्थान से दूसरे स्थान ले जायी जाती है इन मन्दिरों पर आज भी मेंलों का आयोजन होता है जिसमें ग्रामीण संस्कृति के दर्शन किये जा सकते है। भिलंगना नदी घाटी में आयोजित हाने वाले मेलों का विवरण :–

- विल्वेश्वर महादेव मेला –श्रावण मास
- फैण्डेश्वर महादेव मेला – वैशाख मास चार गते
- राजराजेश्वरी मन्दिर मेला – शीतकालीन नवरात्री असूज माह
- भैरवनाथ पर्यटन विकास मेला – 23 से 25 अप्रैल प्रत्येक वर्ष
- ज्वालामुखी पर्यटन मेला – बसंत नवरात्री चैत्र माह
- नैलेश्वर महादेव मेला –शिवरात्री के अवसर पर
- बाल खिलेश्वर महादेव मेला – शिवरात्री के अवसर पर
- बूढाकेदार पर्यटन मेला – दीपावली के अवसर पर
- मासर ताल पर्यटन मेला – प्रत्येक वर्ष भाद्रपद मास में
- जगदीशिला मेला – पूष मास में
- गंगा दशहरा मेला – मई में

साहसिक खेल :–साहसिक खेल पर्यटन के रुप में घाटी में अनेकों स्थान ऐंसे हैं जिन को विकसित करना देशी व विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये अति आवश्यक है। इन स्थानों में शीत कालीन व ग्रीष्म कालीन खेलों ट्रैकिगं, पैराग्लाइडिंग, नौकायन, स्कीइंग, आदि को अधिक विकसित किया जाना चाहिये। क्षेत्र में ट्रैकिगं के अनेक ट्रैक हैं जिनमें सहस्त्र ताल ट्रैकिगं ट्रैक, बूढाकेदार–महासरताल– सहस्त्रताल ट्रैकिगं ट्रैक, भैरवचट्टी–घुत्तू–पंवाली–त्रियुगी नारायण ट्रैकिगं ट्रैक, बूढाकेदार–मज्याड ताल एवं बेलख–भटवाडी ट्रैकिगं ट्रैक, घुत्त–गंगी–खरसाली–खतलिंग ट्रैकिगं ट्रैक, आदि प्रमुख है।

VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

पर्यटन हेतु प्रमुख पर्यटन स्थलों के स्थिति एवं विस्तार :–

क्रमं	पर्यटन स्थल	अक्षांश	देशान्तर	ऊँचाई (फीट में)
1	घनसाली	30°25′44″	78°39′29″	2870
2	हथकुण्डी	30°32′50″	78°42′27″	7854
3	थयेली	30°26′37″	78°41′22″	4122
4	चौंरा	30°22′20″	78°46′34″	4634
5	मासर ताल	30°45′02″	78°59′15″	15665
6	चांजी	30°25′47″	78°47′30″	5700
7	सहस्त्र ताल	30°43′08″	78°48′49″	15003
8	खरसोली	30°44′25″	78°53′47″	9597
9	पंवाली कांठा	30°34′08″	78°51′59″	10744
10	गंगी गांव	30°38′09″	78°51′05″	8712
11	रानीगढ़ी माता मन्दिर	30°29′56″	78°47′27″	4460
12	घुत्तू	30°31′45″	78°47′26″	5043
13	भील सरोवर	30°47′20″	78°57′26″	12166
14	खतलिंग	30°48′20″	78°57′00	12239

पर्यटन को प्रभावित करने वाले तत्व :–

- प्राकृतिक आपदायें जैसे दावाग्नि, भूस्खलन, त्वरित बाढ़, जंगली जानवरों का प्रकोप, बादल फटना, जैसी घटनायें
- सड़कों का निर्माण व रखरखाव ना होना जिस कारण क्षेत्र में भ्रमण करना सुगम नही है।
- रात्री विश्राम के लिये निजी या सार्वजनिक आवास, धार्मशाला, लॉज आदि की कमी

- भाषा से सम्बधित समस्या जिस कारण पर्यटकों को असुविधा होती है
- उचित दाम पर गाइड़ों की उपलब्धता न होना
- स्थानीय लोगों के द्वारा पर्यटकों को अधिक दामों पर वस्तुऐं उपलब्ध करवाना
- क्षेत्र में पर्यटन विकास के लिए सरकार की उदासीनता आदि प्रमुख कारक हैं।

क्षेत्र में पर्यटन विकास हेतु सुझाव

- ठहरने हेतु आरामदायक किन्तु सस्ते होटल व धर्मशाला बनायी जायें।
- अधिकांश स्थानों में धर्मशाला या तो नहीं है या जीर्णशीर्ण अवस्थाओं में है उनमें शौचालयों की उचित व्यवस्था व उनका जीर्णोधार किया जाना चाहिये।
- पर्यटकों की सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था हेतु पुलिस सुरक्षा बल बढ़ाया जाये।
- पर्याप्त परिवहन व्यवस्था ताकी परिवहनों पर अतिरिक्त भार ना हो व दुर्घटना भी कम हो।
- स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों के शोषण को रोकना।
- सफाई की उचित व्यवस्था करना।
- विद्युत की आपूर्ति की उचित व्यवस्था।
- कुशल व प्रशिक्षित गाइडों की पूर्ति व व्यवस्था की जाये जो अनेक भाषायें जानता हो तथा जिनका निश्चित वेतन हों
- पर्यटक स्थलों को पर्यटन मानचित्रों पर प्रचार प्रसार करने को बढ़वा देना।

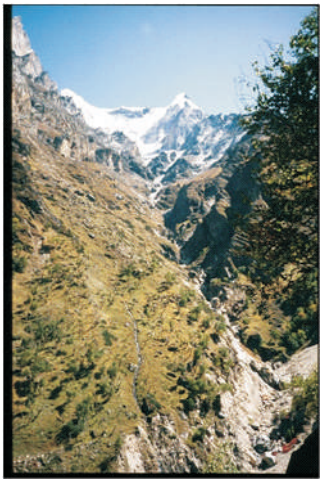

थैल्या सागर पीक

भिलंगना नदी का उद्गम

REFERENCES

- खरे, ऋचा. (2010), उत्तराखण्ड के आर्थिक विकास में पर्यटन स्थलों का योगदान, पर्यटन भूगोल में एक अध्ययन, शोध ग्रन्थ. हे.न.ब.ग.वि.विद्यालय.
- नेगी, चन्दन. (2008). पर्यटन विकास के सन्दर्भ में गैरसैण क्षेत्र का भू आकृतिक अध्ययन, शोध ग्रन्थ. हे.न.ब.ग.वि.विद्यालय.
- जोशी, शिव दयाल. (1995),सहस्त्रताल, उत्तराखण्ड प्रिन्टर्स, नई दिल्ली–15
- सिहं, भूदेव.एवं राजपूत,हरीश कूमार, 2014, भारत में पर्यटन उद्योग की प्रगति एवं समस्यायें, रुहेलखण्ड भौगोलिक शोध पत्रिका, अंक 16,पृ.75–80
- रावत .मीनाक्षी, (2008), जनपद उत्तरकाशी में पर्यटन विकास, वर्तमान परिदृश्य, समस्याऐं एवं सम्भावनाऐं, शोध ग्रन्थ. हे.न.ब.ग.वि.विद्यालय.
- सिहं. अरुण, (2007), अवध परिक्षेत्र में पर्यटन विकास की सम्भावनाऐं: एक भौगोलिक विश्लेषण, शोध ग्रन्थ.

• लाल.बचन, (2007), पश्चिमी उत्तरांचल के क्षेत्रीय विकास के लिए पर्यटन संसाधनों का भौगोलिक विश्लेषण
• Raj.dev, (2007) Eco Tourism in Himachal Pradesh – A Geographical Analysis. Ph.D. thesis
• Bhatt,R. (2007). "Geographic Appraisial of Tourism Potential in Uttaranchal and Planning for Economic Development" Ph.D. thesis
• Rawat,B.B.S. (1991) "Garhwal : A geographical Study of Tourism with special Emphasis on Recent Development" Ph.D. thesis
• Bisht, H. & Chauhan, R.S. (2006), Eco-tourism for Garhwal Himalaya in Central Himalaya Environment and Development Potential Action and challenges, Editor M.S.S. Rawat. Dept. of Geography' H.N.B.G.U.
• Uttarakhand Tourism-Uttaranchal Travel Guide 2017. eUttaranchal.
• Kumar,R.,Chauniyal.D.D,& Dutta,S. (2016)." Demographic Profile of The Kumaun Himalaya (Uttarakhand)". " Research stetegy" A National Research journalof Geography &Environmental Thought. Vol.VI, 80-83
• Singh, D and kumar, R., (2016). "Hkkjrh; ifjizs{k esa tutkrh; tul[;ka dk fodkl" Indian Stream research Journal, International Recognition Multidisciplinary Research journal. vol,VI. pp1-6
• Scott, N. (2011). Tourism policy : A strategic Review, Goodfellow Publishers Limited, Woodeaton, Oxford, OX3 9TJ.
• Tourism policy by Government of Uttarakhand,
• Internet, Google Earth.
• स्थानीय सामाचार पत्र व पत्रिका

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/